भारत कि कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केंद्रीय कमेटी

अभूतपूर्व ढंग से बढाया गया पेट्रोल की कीमतों का विरोध करते हुए

31,मई 2012 को अयोजित की जा रही **'भारत बंद'** को सफल बनावे!

प्रेस विज्ञप्ति दिः 25/5/2012

प्रिय भारत की जनता!

हमारे देश की शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों की विशेषकर अमेरिका साम्राज्यवादियों की एल.पी.जी आर्थिक नीतियों को जब से अपनाना शुरू की तब से महंगाई बड़ना और तेज हुई है। यु.पी.ए – 2 की शासन काल में महंगाई बड़ने में कोई सीमा ही नही होने के चलते देश के आम आदमी का जीवन काफी दुर्बर बनी है। यु.पी.ए – 2 सत्ता में आने की तीसरी वर्षगांठ की समरोह को बडी जोरशोर से अयोजित कर देश के प्रधान मंत्री मनमोहन सिंग ने बेशरम से यूँ कहा की देश में गरीबी बड़ी तेजी से घट रही है। ऐसे उन्होने कोरा झूठ कहने के दुसरे दिन ही देश के जनता को उन्होने अपूर्वस्तर पर पेट्रोल की कीमतों को बड़ाते हुए काफी कड़वा तोफा दि है। विडंबना यह है की देश की प्रधानमंत्री एवं पेट्रोल मंत्री जनता के सामने ऐसा एक गैर जिम्मेदाराना बयान दिए है की पेट्रोल की कीमतें बडने के पीछे उनकी कोई भूमिका नही है। केंद्र सरकार के इस रवैया को और बडाया गया पेट्रोल की कीमतों को खंडन करते हुए उसके विरोध में की जा रही मई 31 **भारत बंद** को सफल बनाने हेतु हमारी पार्टी भारत की जनता से अनुरोध करती है।

पेट्रोल कंपनियों का कहना यह है की पेट्रोल की दर बडाने के पीछे डॉलर के साथ रूपया का अवमूल्यन ही एक मात्र वजह है। लेकिन वास्तव में हमें यह समझना है की देश की शासक वर्गों से अपनाई गई दिवालियपन मुद्रा नीति ही उसके लिए असली जड़ है। देश में मुद्रास्फिती सरकार के आंकडों के मुताबिक विगत कुछ समय से दो आंकडों की नजदीक धूम रही है। देश में लगभग 15 लाख करोड रूपयों का विदेशि मुद्रा भंडार होने को गर्व के साथ बताते आई सरकार ने फिलहाल उसमें तेजी से आ रही गिरावट को देखते हुए जनता के सामने अपनी मूँह मोड़ रही है। दिन – ब – दिन बडते जा रहे आर्थिक संकट से देश को बाहर लाने के नाम पर रेपो रेट को घटाना, सी.आर.आर. को घटाना जैसे कई प्रकार के एक्सरसाईज करने के बावजूद भी मुद्रास्फिती को काबूमें रखने में असमर्थ रही केंद्र सरकार व्यापारियों के सामने घुटने टेककर आम आदमी का सहन की बडी परिक्षा ले रही है। विगत 14 महिनों में 10 दफा पट्रोल की कीमतें बडना देश की जनता के सामने एक बडा चुनौती भरा सवाल बन गई। पेट्रोल की कीमतों को बडाने का मतलब यह है कि वह सभी क्षेत्रों को उसकी चपेट में लेते हुए बाजार में अन्य सभी चीजों की मंहगाई को बड़ा कर जल रही सधारण आदमी का जीवन को चिलचिला ते धूप में फेंकने के जैसे करेगी।

भारत की शासक वर्गों द्वारा अमल कि जा रही एल.पी.जी आर्थिक नीतियों के फलस्वरूप भारत के अर्थव्यवस्था वास्तव में गंभीर संकट में फसी हैं। लेकिन देश के यु.पी.ए सरकार ने खुशि से यह कहती है की भारत की अर्थव्यावस्था का विकास दर दुनिया में दुसरी नंबर पर है। दुसरी ओर वह सरकार देश में दिन प्रति दिन आम जनता झेल रही गरीबी, बेरोजगारी, ऋण की बोझ, महंगाई, अशिक्षा एवं अस्वास्थता जैसे गंभीर समस्याओं को हल करने में बूरी तरह विफल रही है। इस के बावजूद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंग से लेकर योजना आयोग की अध्यक्ष मोन्टेक सिंग अहलुवालिया तक काई सरकारि अर्थशास्त्रियों ने गरीबी घटने की आंकडे पेश कर रहे है। इन लोगों ने देश की आर्थिक क्षेत्र में सामने आ रही सभी समस्याओं का मूल कारण सब्सिडियों को बता रहे है। इन लोगों ने पेट्रोल और युरिया को (खाद) सब्सिडी से हटा कर बाकि चीजों को भी हटाने की दिशा में आगे बड रहे है। यह गरीबों का जिंदगी को और दुर्बर करेगी। गरीबों की जेब को काट कर बडे कार्पोरेट घरानों को फायदा पहुंचाने वाली साम्राज्यवादि आर्थिक नीतियॉ जब तक इस देश में अमल होगी तब तक सत्ता में भले ही यु.पी.ए सरकार हो अथवा एन.डी.ए सरकार हो या संशोधनवादियों द्वारा सामने लाया जा रही तीसरी फ्रांट हो जनता की जीवन में कोई मौलिक तबदीली नही होगी। विगत 65 वर्षो में इस देश की शोषणवादि राजनीति इस बात को बार – बार साबित की है। इस देश में स्वावलंबना आर्थिक नीतियां, जनवादि राजनीतिक नीतियों को अपना ते हुए कृषि एवं उध्योग को समन्वय रूप से विकास करने की मकसद को लेकर उत्पीडित जनता की हित में सरकारें गठन होन पर ही मंहगाई पर रोक, मुद्रास्फिति पर रोक पाना संभव

होगा। यह सत्य विगत में समाजवादि रूस एवं चीन में साबित हुई है। उस दिशा में वर्तमान में संघर्ष कर रही झारखंड, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र (गडचिरोली, चंद्रपूर,गोंदिया,भंडारा) उडिशा, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगा, बिहार की जनता देश की जनता के साथ भारत बंद में सक्रिय रूप से भाग लेने हेतु हमारी पार्टी अपील कर रही है।

देश में ग्रीन हंट के नाम से भारत के शासक वर्गों द्वारा चलाई जा रही गृह युद्ध जैसे परिस्थितियों के बीच में कई तकलीफे झेल रही जनता को विशेषकर आदिवासी जनता को आज कि मूल्य वृद्धि कितना दुर्बर होगा नही बता सकते। एक तरफ हाट बाजारें बंद होकर, सामान सही रूप से न पा रहे संघर्षशील जनता को दूसरी तरफ पेट्रोल की किमतें बडना उनके दिक्कतों को दुगुनी करेगी। अथः इस लूटेरे सरकारों को हराकर वैकल्पिक व्यवस्था को कायम करने की दिशा में आगे बड रही जनता इस मूल्य वृद्धि के विरोध में चल रही संघर्ष में भी अग्रिम पंक्थि में खडा होने के लिए हमारी पार्टी अनुरोध कर रही है।

Abhay

(अभय)

प्रवक्ता,

केन्द्रीय कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी),